SC

(A-7) Seat No: _____ **No. Of Printed Pages: 2**

SARDAR PATEL UNIVERSITY

M.A.(PREVIOUS) EXTERNAL EXAMINATION

Monday,25th April-2016

10-30 A.M.to 1-30 P.M.

Hindi-401(Paper-1)

(प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

पूर्णांक : 100

प्रश्न-1. कबीर के रहस्यवाद को सोदाहरण समझाइए।

अथवा (20)

'विद्यापती की पदावली' की काव्यगत विशेषताओं की चर्चा करें।

प्रश्न-2. सूरदास के 'भ्रमरगीत सार' का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा (20)

जायसी कृत 'पद्मावत' के महाकाव्यत्व को स्पष्ट करें।

प्रश्न-3. 'अयोध्याकाण्ड' के महत्वपूर्ण प्रसंगों की चर्चा कीजिए। (20)

अथवा

रीतिकाल में घनानंद के स्थान एवं महत्व को समझाइए।

प्रश्न-4 टिप्पणियाँ लिखिए : (20)

क. कबीर का समाज दर्शन

अथवा

क. तुलसीदास का कृतित्व

ख. सूर की भाषा

अथवा

ख. घनानंद की प्रेम व्यंजना

प्रश्न-5 ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए। (20)

क. "तिमिर तरुन तरनिहि मकु गिलई। गगनु मगन मकु मेघहि मिलई।।
गोपद जल बूड़हिं घट जोनी। सहज छमा बरु छाँड़ै छोनी।।
मसक फूँक मकु मेरु उड़ाई। होई न नृपमदु भरतहि भाई।।
लखन तुम्हार सपथ पितु आना। सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना।।
सगुन खीरु अवगुन जलु ताता। मिलई रचइ परपंचु विधाता।।
भरतु हँस रविवंस ताड़गा। जनमि कीन्ह गुन दोष विभागा।।

(P.T.O.)

गहि गुन पय तजि अवगुन वारी।निज जस जगत किन्हि उजियारी।।
कहत भरत गुन सीलु सुभाऊ। प्रेम पयोधि मगन रघुराउ।।
सुनि रघुवीर बानी विबुध देखि भरत पर हेतु।
सकल सराहत राम सों प्रभु को कृपानिकेतु।।"""

अथवा

क. "रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारिये।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी, अघानि कहूँ नहिं आनि तिहारिये।
एकहि जीव हुतौ सु तौ वारयौ, सुजान-सकोच औ सोच सहारिये।
रोकी रहै न, दहै, घनआनँद बावरी रीझ के हाथनि हारिये।।"

ख . "कबीर सतगुर मार्या बाण भरि, धरि करि सूधी मूठि।
अंगि उघाड़ै लागिया, गई दवा सूं फूटि।।
हसै न बोले उनमनीं, चंचल मेल्ह्या मारि।
कहै कबीर भीतरि भिद्या, सतगुरु कै हथियारि।"

अथवा

ख. "उधौ! हम-लायक सिख दीजै।
यह उपदेस अगिनि तें तातो, कहो कोन बिधि कीजै?
तुमहीं कहौ यहाँ इतनिन में साखनहारो को है?
जोगी जती रहित माया से तिनको यह मत सोहै।।
जो कपूर चंदन तन लेपत तेहि बिभूति क्यों छाजै?
सूर कहौ सोभा क्यों पावे आँख आँधरी आँजै।।"